http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 8, 14-19

Article ID:637

भारत में समुद्री उत्पाद उद्योग: वर्तमान स्थिति, विकास की संभावनाएँ, चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएँ

डॉ. किरण एन. पटेल[1], डॉ. स्वाति एस. शर्मा[2]

[1]सहायक प्राध्यापक
ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान
नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

[2]प्रोफेसर
ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान
नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

*अनुरूपी लेखक
डॉ. किरण एन. पटेल*

समुद्री उत्पाद उद्योग वैश्विक **ब्लू इकोनॉमी (Blue Economy)** का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन, विदेशी मुद्रा अर्जन तथा सतत आर्थिक विकास में उल्लेखनीय योगदान देता है। इस उद्योग में समुद्री मत्स्य पकड़ (Capture Fisheries), जलीय कृषि (Aquaculture), समुद्री खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, विपणन, परिवहन तथा समुद्री उत्पादों के निर्यात जैसी गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।

वैश्विक स्तर पर प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग, जलीय कृषि में तकनीकी प्रगति तथा अंतरराष्ट्रीय समुद्री खाद्य व्यापार के विस्तार ने इस उद्योग की वृद्धि को गति प्रदान की है। विस्तृत समुद्री तटरेखा, विशाल विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic Zone-EEZ) तथा प्रचुर अंतर्देशीय जल संसाधनों से समृद्ध भारत आज विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मत्स्य उत्पादक तथा समुद्री उत्पादों का एक प्रमुख निर्यातक देश बन चुका है। यह क्षेत्र ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ बनाने, तटीय समुदायों के आर्थिक विकास तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

यद्यपि इस उद्योग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, फिर भी संसाधनों की सतत उपलब्धता, जलवायु परिवर्तन, आधारभूत संरचना की कमी, कटाई उपरांत होने वाली क्षति तथा अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुपालन जैसी अनेक चुनौतियाँ इसके समक्ष विद्यमान हैं। दूसरी ओर, मूल्य संवर्धन, समुद्री खाद्य प्रसंस्करण, समुद्री जैव प्रौद्योगिकी तथा निर्यात बाजारों के विविधीकरण जैसे क्षेत्र उद्योग के भविष्य के लिए व्यापक अवसर प्रस्तुत करते हैं। यह लेख वैश्विक एवं भारतीय समुद्री उत्पाद उद्योग की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करता है, विशेष रूप से गुजरात पर ध्यान केंद्रित करते हुए उद्योग की विकास संभावनाओं, प्रमुख चुनौतियों, नियामक ढाँचे तथा सतत एवं प्रतिस्पर्धी विकास हेतु आवश्यक रणनीतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

वैश्विक समुद्री उत्पाद परिदृश्य

वैश्विक समुद्री उत्पाद उद्योग विश्व अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो खाद्य सुरक्षा, रोजगार सृजन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार तथा सतत आर्थिक विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाता है। इस उद्योग में समुद्री मत्स्य पकड़, जलीय कृषि, समुद्री खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, परिवहन, विपणन तथा समुद्री उत्पादों का निर्यात सम्मिलित है। समुद्री खाद्य पदार्थों के पोषण संबंधी लाभों के प्रति उपभोक्ताओं में बढ़ती जागरूकता, बढ़ती आय तथा प्रोटीन युक्त आहार की वैश्विक

मांग में वृद्धि ने इस उद्योग के तीव्र विस्तार को प्रोत्साहित किया है।

पिछले पाँच दशकों में वैश्विक मत्स्य उत्पादन में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2025 में विश्व का कुल मत्स्य उत्पादन लगभग 197 मिलियन टन तक पहुँच गया, जिसमें 92.9 मिलियन टन उत्पादन समुद्री एवं अंतर्देशीय मत्स्य पकड़ (Capture Fisheries) तथा 104.1 मिलियन टन उत्पादन जलीय कृषि (Aquaculture) से प्राप्त हुआ। वर्तमान समय में एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति यह है कि समुद्री मत्स्य पकड़ का उत्पादन प्राकृतिक संसाधनों की सीमाओं तथा उनके सतत दोहन की आवश्यकता के कारण लगभग स्थिर हो गया है, जबकि जलीय कृषि निरंतर तीव्र गति से विकसित हो रही है। परिणामस्वरूप, आज वैश्विक समुद्री खाद्य उत्पादन की वृद्धि का प्रमुख आधार जलीय कृषि बन चुकी है।

विश्व स्तर पर मत्स्य उत्पादन का सबसे बड़ा भाग मानव उपभोग के लिए उपयोग किया जाता है। वर्ष 2025 में लगभग 175.3 मिलियन टन मछली का उपयोग खाद्य के रूप में किया गया, जबकि लगभग 21.7 मिलियन टन उत्पादन का उपयोग गैर-खाद्य उद्देश्यों, जैसे फिश मील, फिश ऑयल, औषधियों, सौंदर्य प्रसाधनों तथा अन्य औद्योगिक उत्पादों के निर्माण में किया गया। इसी अवधि में वैश्विक प्रति व्यक्ति मछली उपभोग बढ़कर लगभग 21.1 किलोग्राम प्रति व्यक्ति हो गया, जो पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में समुद्री खाद्य पदार्थों की बढ़ती भूमिका को दर्शाता है।

एशिया वैश्विक मत्स्य एवं जलीय कृषि उत्पादन में अग्रणी क्षेत्र बना हुआ है। चीन विश्व का सबसे बड़ा उत्पादक देश है, जबकि भारत, इंडोनेशिया, वियतनाम तथा बांग्लादेश इसके बाद प्रमुख स्थान रखते हैं। इन देशों ने जलीय कृषि में आधुनिक तकनीकों, उन्नत प्रजनन प्रणालियों, वैज्ञानिक आहार प्रबंधन, रोग नियंत्रण, आधुनिक प्रसंस्करण सुविधाओं तथा निर्यातोन्मुख मूल्य श्रृंखलाओं के विकास के माध्यम से अपनी प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को और मजबूत किया है। भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक देश बन चुका है, जो अंतरराष्ट्रीय समुद्री खाद्य बाजार में उसकी बढ़ती भूमिका को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

वैश्विक समुद्री उत्पाद बाजार में अब पारंपरिक कच्चे समुद्री उत्पादों के निर्यात से हटकर उच्च मूल्य वाले प्रसंस्कृत एवं मूल्य संवर्धित उत्पादों की ओर तेजी से परिवर्तन हो रहा है। वर्तमान में उपभोक्ताओं की मांग फ्रोजन सी-फूड, रेडी-टू-कुक उत्पाद, रेडी-टू-ईट भोजन, डिब्बाबंद मछली, फिश फिलेट, बैटर कोटेड झींगा तथा अन्य सुविधा-आधारित खाद्य पदार्थों की ओर बढ़ रही है। इस परिवर्तन ने आधुनिक समुद्री खाद्य प्रसंस्करण तकनीकों, कोल्ड-चेन अवसंरचना, गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली, ट्रेसबिलिटी तंत्र तथा अंतरराष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा प्रमाणनों में निवेश को बढ़ावा दिया है।

उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद वैश्विक समुद्री उत्पाद उद्योग अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। अत्यधिक मत्स्य दोहन (Overfishing), जलवायु परिवर्तन, समुद्री प्रदूषण, समुद्री आवासों का क्षरण, अवैध, अपंजीकृत एवं अनियमित (IUU) मत्स्य दोहन, ईंधन लागत में वृद्धि तथा आयातक देशों द्वारा लागू कठोर गुणवत्ता मानक उद्योग की स्थिरता एवं लाभप्रदता को प्रभावित कर रहे हैं। इसलिए विभिन्न देशों की सरकारें एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ उत्तरदायी मत्स्य प्रबंधन, पारिस्थितिकी तंत्र आधारित दृष्टिकोण, सतत जलीय कृषि तथा ब्लू इकोनॉमी आधारित विकास रणनीतियों को बढ़ावा दे रही हैं, ताकि समुद्री संसाधनों का दीर्घकालिक संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके।

समग्र रूप से देखा जाए तो वैश्विक समुद्री उत्पाद उद्योग में भविष्य की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं। सतत जलीय कृषि का विस्तार, समुद्री जैव प्रौद्योगिकी का विकास, मूल्य संवर्धित उत्पादों का बढ़ता उत्पादन, समुद्री खाद्य आपूर्ति श्रृंखला का डिजिटलीकरण तथा स्वास्थ्यवर्धक समुद्री खाद्य पदार्थों की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय मांग आने वाले वर्षों में इस उद्योग की वृद्धि को नई दिशा प्रदान करेगी। ये विकास वैश्विक खाद्य सुरक्षा, रोजगार सृजन,

विदेशी मुद्रा अर्जन तथा सतत आर्थिक विकास में समुद्री क्षेत्र की भूमिका को और अधिक सुदृढ़ करेंगे।

भारतीय समुद्री उत्पाद उद्योग

भारत विश्व के अग्रणी समुद्री उत्पाद उत्पादक एवं निर्यातक देशों में से एक है। लगभग 11,098.81 किलोमीटर लंबी समुद्री तटरेखा, लगभग 20 लाख वर्ग किलोमीटर के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic Zone-EEZ) तथा समृद्ध अंतर्देशीय जल संसाधनों के कारण भारत को समुद्री मत्स्य संसाधनों का व्यापक प्राकृतिक आधार प्राप्त है। देश विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मत्स्य उत्पादक है तथा वैश्विक मत्स्य उत्पादन में लगभग 8 प्रतिशत का योगदान देता है। भारत अपने समुद्री उत्पादों का निर्यात विश्व के 130 से अधिक देशों को करता है।

भारत का समुद्री मत्स्य क्षेत्र खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन, विदेशी मुद्रा अर्जन तथा ग्रामीण एवं तटीय आजीविका को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्ष 2025 तक यह उद्योग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 58 लाख (5.8 मिलियन) लोगों को रोजगार प्रदान कर रहा है। समुद्री उत्पादों के प्रमुख निर्यातक राज्यों में आंध्र प्रदेश, गुजरात, केरल, तमिलनाडु तथा पश्चिम बंगाल शामिल हैं, जबकि ओडिशा, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में समुद्री मत्स्य क्षेत्र के विकास की पर्याप्त संभावनाएँ उपलब्ध हैं।

भारत में मत्स्य क्षेत्र हेतु सुविकसित आधारभूत संरचना उपलब्ध है, जिसमें 1,537 मत्स्य अवतरण केंद्र (Fish Landing Centres), लगभग 5,000 मत्स्य ग्राम तथा लगभग 49 लाख मछुआरे (Fisherfolk) शामिल हैं। देश के प्रमुख निर्यातित समुद्री उत्पादों में श्रिम्प (झींगा), प्रॉन, रिबन फिश, स्किड तथा कटलफिश प्रमुख हैं, जिनमें श्रिम्प का समुद्री उत्पादों के निर्यात से प्राप्त आय में सर्वाधिक योगदान है।

भारतीय समुद्री उत्पाद उद्योग तेजी से मूल्य संवर्धित समुद्री खाद्य प्रसंस्करण (Value-added Seafood Processing), उन्नत कोल्ड-चेन लॉजिस्टिक्स, गुणवत्ता आश्वासन तथा सतत जलीय कृषि (Sustainable Aquaculture) की ओर अग्रसर हो रहा है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY), समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (Marine Products Export Development Authority-MPEDA) तथा ब्लू इकोनॉमी मिशन जैसी सरकारी पहलें आधारभूत संरचना के विकास, आधुनिक तकनीकों को अपनाने, निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने तथा समुद्री संसाधनों के सतत प्रबंधन को प्रोत्साहित कर रही हैं।

उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद भारतीय समुद्री उत्पाद उद्योग अभी भी कटाई उपरांत होने वाली क्षति (Post-harvest Losses), अपर्याप्त आधारभूत संरचना, जलवायु परिवर्तन, अंतरराष्ट्रीय मांग में उतार-चढ़ाव तथा मूल्य संवर्धन की सीमित क्षमता जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। तकनीकी नवाचार, उत्पादों के विविधीकरण तथा सतत मत्स्य प्रबंधन के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान कर भारत वैश्विक समुद्री उत्पाद बाजार में अपनी प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ बना सकता है।

गुजरात का समुद्री उत्पाद उद्योग

गुजरात भारत के प्रमुख समुद्री मत्स्य राज्यों में से एक है। अरब सागर के किनारे स्थित लगभग 1,600 किलोमीटर लंबी समुद्री तटरेखा के साथ यह देश का सबसे लंबा समुद्री तट रखने वाला राज्य है। राज्य के पास प्रचुर समुद्री संसाधन, सुविकसित मत्स्य बंदरगाह, आधुनिक समुद्री खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ तथा सुदृढ़ निर्यात नेटवर्क उपलब्ध है, जिसके कारण गुजरात भारत की समुद्री अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

वर्ष 2023–24 के दौरान गुजरात में कुल 9,07,901 टन मत्स्य उत्पादन दर्ज किया गया, जिसमें 7,04,828 टन समुद्री मत्स्य तथा 2,03,073 टन अंतर्देशीय मत्स्य उत्पादन शामिल था। राज्य की प्रमुख समुद्री प्रजातियों में स्मॉल स्कायनिड्स (Small Sciaenids), रिबन फिश तथा बॉम्बे डक

प्रमुख हैं, जबकि अंतर्देशीय मत्स्य उत्पादन में प्रॉन, कतला, रोहू एवं मृगल का महत्वपूर्ण योगदान है। गुजरात समुद्री उत्पादों के निर्यात में भी अग्रणी राज्यों में शामिल है। राज्य का समुद्री उत्पाद निर्यात 2019–20 में 2,79,751 मीट्रिक टन **(**मूल्य ₹5,019.48 करोड़**)** से बढ़कर 2023–24 में 3,36,961 मीट्रिक टन (मूल्य ₹6,087 करोड़) हो गया, जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाता है।

गुजरात का समुद्री क्षेत्र रोजगार सृजन, आय वृद्धि, तटीय समुदायों की आजीविका तथा विदेशी मुद्रा अर्जन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। राज्य में आधुनिक समुद्री खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ, कोल्ड-चेन सुविधाएँ, मत्स्य बंदरगाह तथा आधुनिक मत्स्य अवतरण केंद्र विकसित किए गए हैं, जो सम्पूर्ण मत्स्य मूल्य श्रृंखला (Fisheries Value Chain) को सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, सतत मत्स्य पालन, जलीय कृषि के विकास, आधारभूत संरचना में सुधार तथा मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने वाली सरकारी पहलों ने राज्य के समुद्री उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को और मजबूत किया है।

यद्यपि गुजरात का समुद्री उत्पाद उद्योग उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है, फिर भी यह जलवायु परिवर्तन, समुद्री संसाधनों के अत्यधिक दोहन, कटाई उपरांत होने वाली क्षति, निर्यात मांग में उतार-चढ़ाव तथा मूल्य संवर्धन की आवश्यकता जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। सतत मत्स्य प्रबंधन को मजबूत करना, समुद्री खाद्य प्रसंस्करण का विस्तार करना, आधुनिक तकनीकों को अपनाना तथा नए अंतरराष्ट्रीय निर्यात बाजारों की खोज करना गुजरात को भारत के समुद्री उत्पाद उद्योग में अपनी अग्रणी स्थिति को और अधिक सुदृढ़ करने में सहायता करेगा।

5. विकास की संभावनाएँ (Growth Potential)

भारत का समुद्री उत्पाद उद्योग अपने समृद्ध समुद्री संसाधनों, वैश्विक स्तर पर समुद्री खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग, अनुकूल सरकारी नीतियों तथा मूल्य संवर्धन (Value Addition) पर बढ़ते ध्यान के कारण अपार विकास संभावनाएँ रखता है। उत्पाद विविधीकरण, निर्यात बाजारों के विस्तार, समुद्री खाद्य प्रसंस्करण तथा समुद्री जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में उद्योग के तीव्र विकास के व्यापक अवसर उपलब्ध हैं।

5.1 उत्पादों की संभावनाएँ (Product Potential)

भारत के पास पारंपरिक समुद्री उत्पादों से आगे बढ़कर अपने उत्पाद पोर्टफोलियो में विविधता लाने की अत्यधिक संभावनाएँ हैं। मड क्रैब (Mud Crab), व्हाइट प्रॉन, टाइगर प्रॉन, समुद्री झींगा (Marine Shrimp), टूना, स्किड, कटलफिश, लॉब्स्टर, पर्ल स्पॉट, ऑयस्टर तथा गहरे समुद्र की झींगा प्रजातियाँ (Deep-sea Shrimp) जैसे उच्च मूल्य वाले समुद्री उत्पाद व्यावसायिक दृष्टि से अत्यंत लाभकारी हैं। इसके अतिरिक्त, उद्योग अब पारंपरिक कच्चे समुद्री उत्पादों के निर्यात से आगे बढ़कर फिश फिलेट, डिब्बाबंद मछली (Canned Fish), बैटर कोटेड झींगा (Battered Shrimp), रेडी-टू-कुक तथा रेडी-टू-ईट समुद्री खाद्य पदार्थों जैसे मूल्य संवर्धित उत्पादों की ओर तेजी से अग्रसर हो रहा है। गहरे समुद्र के कम उपयोग किए गए संसाधनों का वैज्ञानिक दोहन तथा विभिन्न समुद्री प्रजातियों का व्यावसायिक विकास निर्यात आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकता है।

5.2 बाजार की संभावनाएँ

भारतीय समुद्री उत्पादों की वैश्विक मांग लगातार बढ़ रही है, जिससे वर्तमान एवं उभरते हुए दोनों प्रकार के निर्यात बाजारों में विस्तार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका (USA), जापान, स्पेन, इटली तथा यूनाइटेड किंगडम (UK) भारतीय समुद्री उत्पादों के प्रमुख आयातक हैं, जबकि चीन, वियतनाम, जर्मनी, बेल्जियम, कनाडा तथा हांगकांग जैसे देशों में भविष्य में निर्यात वृद्धि की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। इसके साथ ही देश में समुद्री खाद्य पदार्थों की बढ़ती खपत, स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता तथा कोल्ड-चेन अवसंरचना में सुधार भी घरेलू एवं

अंतरराष्ट्रीय बाजार की संभावनाओं को और अधिक मजबूत बना रहे हैं।

5.3 समुद्री खाद्य प्रसंस्करण की संभावनाएँ

समुद्री खाद्य पदार्थों का मूल्य संवर्धन (Value Addition) उद्योग की वृद्धि का प्रमुख आधार बन चुका है। उपभोक्ताओं की रेडी-टू-ईट एवं रेडी-टू-कुक समुद्री खाद्य उत्पादों के प्रति बढ़ती रुचि के कारण आधुनिक प्रसंस्करण सुविधाओं की मांग तेजी से बढ़ी है। उन्नत प्रसंस्करण तकनीकों, कोल्ड-चेन अवसंरचना, गुणवत्ता आश्वासन प्रणालियों, HACCP प्रमाणन, आधुनिक पैकेजिंग तथा ट्रेसबिलिटी (Traceability) प्रणाली में निवेश से भारत की निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है तथा कटाई उपरांत होने वाली क्षति को कम किया जा सकता है। प्रसंस्करण क्षमता के विस्तार से भारत अपने समुद्री संसाधनों से अधिक आर्थिक मूल्य अर्जित करने में सक्षम होगा।

5.4 समुद्री जैव प्रौद्योगिकी की संभावनाएँ

समुद्री जैव प्रौद्योगिकी (Marine Biotechnology) ब्लू इकोनॉमी का एक उभरता हुआ एवं अत्यधिक संभावनाशील क्षेत्र है। समुद्री जीवों से प्राप्त जैव-सक्रिय यौगिक (Bioactive Compounds) का उपयोग औषधि निर्माण, न्यूट्रास्यूटिकल्स (Nutraceuticals), सौंदर्य प्रसाधन, कृषि तथा विभिन्न औद्योगिक उत्पादों के विकास में किया जाता है। समुद्री जैव प्रौद्योगिकी में हो रही प्रगति नई औषधियों, कार्यात्मक खाद्य पदार्थों (Functional Foods), रोग प्रतिरोधी जलीय कृषि प्रजातियों तथा पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन प्रणालियों के विकास के नए अवसर प्रदान कर रही है। समृद्ध समुद्री जैव विविधता के कारण भारत इस क्षेत्र में अनुसंधान, नवाचार एवं व्यावसायीकरण को बढ़ावा देकर अपने समुद्री उत्पाद उद्योग की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को और अधिक सुदृढ़ कर सकता है।

भारत के समुद्री उत्पाद उद्योग की प्रमुख चुनौतियाँ

भारत के समुद्री उत्पाद उद्योग के समक्ष निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियाँ विद्यमान हैं—

- परिचालन एवं ईंधन लागत में निरंतर वृद्धि, जिससे लाभप्रदता प्रभावित होती है।
- मत्स्य बंदरगाहों, कोल्ड-चेन, भंडारण तथा प्रसंस्करण अवसंरचना की अपर्याप्त उपलब्धता।
- कच्चे माल की अनियमित एवं मौसमी उपलब्धता।
- जलवायु परिवर्तन, समुद्री प्रदूषण तथा मत्स्य संसाधनों का अत्यधिक दोहन।
- मूल्य संवर्धन का निम्न स्तर तथा समुद्री खाद्य प्रसंस्करण क्षमता का सीमित विकास।
- कुछ चुनिंदा उत्पादों एवं निर्यात बाजारों पर अत्यधिक निर्भरता।
- अंतरराष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा एवं गुणवत्ता मानकों का कठोर अनुपालन।
- कुशल मानव संसाधन की कमी तथा आधुनिक तकनीकों को अपनाने का निम्न स्तर।
- विशेष रूप से छोटे एवं पारंपरिक मछुआरों के लिए संस्थागत वित्त तक सीमित पहुँच।
- वैश्विक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि तथा अंतरराष्ट्रीय बाजार कीमतों में निरंतर उतार-चढ़ाव।

सतत विकास हेतु रणनीतियाँ

भारत के समुद्री उत्पाद उद्योग के सतत एवं समावेशी विकास के लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं—

- मत्स्य बंदरगाहों, कोल्ड-चेन, भंडारण एवं प्रसंस्करण अवसंरचना को सुदृढ़ बनाना।
- मूल्य संवर्धित समुद्री खाद्य उत्पादों तथा उत्पाद विविधीकरण को बढ़ावा देना।
- उभरते हुए अंतरराष्ट्रीय बाजारों में समुद्री उत्पादों के निर्यात का विस्तार करना।
- सतत मत्स्य पालन एवं वैज्ञानिक जलीय कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करना।

- आधुनिक तकनीकों, डिजिटल ट्रेसबिलिटी तथा गुणवत्ता प्रमाणीकरण प्रणालियों को अपनाना।
- सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा उनका प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करना।
- मछुआरों एवं समुद्री उद्यमियों को आसान ऋण एवं वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना।
- समुद्री जैव प्रौद्योगिकी, अनुसंधान एवं नवाचार में निवेश को बढ़ावा देना।
- मत्स्य मूल्य श्रृंखला के सभी स्तरों पर कौशल विकास एवं क्षमता निर्माण को सुदृढ़ करना।
- उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता एवं सतत विकास हेतु सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) को प्रोत्साहित करना।

निष्कर्ष

समुद्री उत्पाद उद्योग भारत की **ब्लू इकोनॉमी** का एक रणनीतिक एवं महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन, विदेशी मुद्रा अर्जन तथा सतत आर्थिक विकास में उल्लेखनीय योगदान देता है। समृद्ध समुद्री संसाधनों, विस्तृत समुद्री तटरेखा, तीव्र गति से विकसित हो रही जलीय कृषि तथा सरकार की प्रोत्साहनकारी नीतियों के बल पर भारत विश्व के प्रमुख समुद्री उत्पाद उत्पादक एवं निर्यातक देशों में अपनी सशक्त पहचान बना चुका है। गुजरात अपने समृद्ध समुद्री संसाधनों, सुदृढ़ मत्स्य अवसंरचना तथा निरंतर बढ़ते समुद्री उत्पाद निर्यात के माध्यम से इस क्षेत्र में भारत की अग्रणी स्थिति को और मजबूत करता है।

उल्लेखनीय उपलब्धियों के बावजूद यह उद्योग जलवायु परिवर्तन, समुद्री संसाधनों के अत्यधिक दोहन, अपर्याप्त आधारभूत संरचना, कटाई उपरांत होने वाली क्षति, सीमित मूल्य संवर्धन तथा अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के कठोर अनुपालन जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों का समाधान सतत मत्स्य प्रबंधन, तकनीकी नवाचार, आधारभूत संरचना के विकास, कौशल उन्नयन तथा वित्तीय संसाधनों तक बेहतर पहुँच के माध्यम से किया जाना आवश्यक है, ताकि उद्योग की दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धात्मकता एवं स्थिरता सुनिश्चित की जा सके।

भविष्य में इस उद्योग का विकास समुद्री उत्पादों के व्यापक विविधीकरण, उभरते हुए वैश्विक निर्यात बाजारों में विस्तार, मूल्य संवर्धित समुद्री खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा देने तथा समुद्री जैव प्रौद्योगिकी एवं डिजिटल तकनीकों में निवेश बढ़ाने पर निर्भर करेगा। सरकार, अनुसंधान संस्थानों, निजी उद्योगों तथा मत्स्य समुदायों के मध्य प्रभावी समन्वय इस क्षेत्र की संपूर्ण क्षमता का उपयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उपयुक्त नीतिगत समर्थन एवं समुद्री संसाधनों के सतत प्रबंधन के माध्यम से भारतीय समुद्री उत्पाद उद्योग वैश्विक स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी, सुदृढ़, पर्यावरण-अनुकूल तथा ब्लू इकोनॉमी आधारित आर्थिक विकास का प्रमुख आधार बनने की क्षमता रखता है।